पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका: विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका

वर्ष: 2; संख्या:2; 2021; पृष्ठ संख्या: 72-76

त्रिपुरी जनजाति में गॉरिया पूजा

✍ डॉ. बीना देबबर्मा

त्रिपुरा के जनजातीय समाज में त्रिपुरी, रियांग, जमातिया, हालाम, नोवातिया, उचई, मुरासिंह जनजातियों का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक समुदाय के अलग-अलग इतिहास, संस्कृति एवं लोक-मान्यताएँ हैं। प्राचीन काल में सभी समुदाय हिंदू धर्म को मानते थे, वर्तमान कुछ समुदायों में ईसाई धर्म का प्रभाव भी देखा जाता है। जिस प्रकार दक्षिण भारत में ओणम, पश्चिम भारत विशेष कर महाराष्ट्र में गणेश उत्सव, उत्तर भारत में दशहरा-दीपावाली, असम में बिहु आदि धूमधाम से मनाये जाते हैं, इसी तरह त्रिपुरा के जनजातीय समाज में भी गॉरिया पूजा बड़े उत्साह से मनाया जाता है; परंतु सभी समुदायों में गॉरिया देवता के प्रतीक एवं पूजा-पद्धति अलग-अलग हैं।

त्रिपुरी समुदाय में गॉरिया पूजा महाबुईसू से आरंभ की जाती है। 'गॉरिया पूजा' का अर्थ 'शिव पूजा' है। यह पूजा मुख्य रूप से पारिवारिक कल्याण, समाज-कल्याण एवं उनकी सुख-समृद्धि आदि के लिए की जाती है। यह पूजा जनजातीय अचाई द्वारा ही संपन्न की जाती है। पूजा से एक सप्ताह पूर्व चैत्र संक्रांति में पूजा की जाती है। जिसे त्रिपुरी समुदाय में हारि-बुइसू कहा जाता है। उस दिन भोर में फूलों को चुनकर उसे खुल (रूई) के धागे में पिरोकर मालाएँ बनायी जाती हैं। इस दिन गाय-बैल सहित सभी पालतू जानवरों को नहला कर फूलों की माला पहनायी जाती है। साथ ही धूप-अगरबत्ती से उनकी पूजा भी की जाती है। हारि बुईसू के दिन त्रिपुरी समुदाय में हल चलाना निषेध है। इस दिन त्रिपुरी महिलाएँ जंगल से विभिन्न प्रकार की साग-सब्जियाँ, फल आदि घर लाती हैं और उन सबको मिलाकर एक सब्जी बनाती हैं। जिसे घर के सभी लोगों को अनिवार्य रूप से खिलाया जाता है। मान्यता है कि इसे खाने से पेट संबंधित रोग ठीक होते हैं। इस दिन गाँव के लोग मिलकर देशी शराब पीते हैं, नाचते-गाते हैं।

हालाँकि समय के अनुसार इन रीति-रिवाजों में बदलाव आ गये हैं।

हारि बुईसू के दिन त्रिपुरी समुदाय में गोत या आसन बनाकर गॉरिया देवता की स्थापना की जाती है। गौरतलब है कि जमातिया समुदाय में महाबुईसू से गॉरिया पूजा आरंभ की जाती है और वे इसे लगातार सात दिनों तक यानी वैशाख के षष्ठी तक मनाते हैं। जमातिया समुदाय के अलावा अन्य सभी जनजातीय समुदायों में वैशाख के छठे दिन यानि हारि बुईसू के सातवें दिन ही गॉरिया देवता की धूमधाम से पूजा की जाती है। त्रिपुरी समुदाय में चैत्र संक्रांति या हारि बुईसू के सातवें दिन घर का स्वामी प्रातः काल स्नान करके वन से वासौक (बाँस का ऊपरी सिरा) काट कर घर लाता है। अचाई के निर्देशानुसार पूर्व या दक्षिण दिशा की ओर उसे जमीन में गाड़ा जाता है। उसके बाद बारुवा (सहयोगी अचाई) फूल और रुई की माला बनाकर गॉरिया देवता के प्रतीक बाँस के ऊपरी सिरा को पहनाता है। रिसा में रूई, धान, दुप घास आदि की गाँठ बाँधकर गॉरिया देवता को बाँधा जाता है। यह रिसा त्रिपुरी समुदाय की पहचान है।

राजेंद्रजीत देबबर्मा की पुस्तक 'गॉरिया पूजा' में भी इस बात का उल्लेख मिलता है कि रिसा त्रिपुरी समुदाय का पारंपरिक परिधान है। पूर्व में यह समुदाय रिसा को ही अपने आराध्य देवी-देवता का प्रतीक बनाते थे। आज भी इसका प्रचलन त्रिपुरी समाज (देबबर्मा समुदाय) में देखा जाता है। उक्त पुस्तक में इस बात का भी जिक्र मिलता है कि रानी हीराबति एक दिन दोपहर के समय झरना से जल लेने गयी। तभी रानी हीराबति ने देखा कि एक महिष(भैंसा) क्रोधित होकर रास्ता रोके खड़ा है। दूसरी तरफ कुछ ही दूरी पर बरचुक बुफाङ(पेड़) पर चढ़कर चौदह लोग भयभीत होकर बैठे हुए हैं। ये चौदह लोग अपना परिचय रानी हीराबति के समक्ष देवता कहकर देते हैं और रानी हीराबति से अपनी रक्षा का निवेदन करते हैं।

उन लोगों की बात सुनकर रानी को आश्चर्य होता है। तब रानी कहती है- 'आप सभी देवतागण एक साथ हैं और महिष से भंयभीत हैं, ऐसे में मैं एक अबला नारी किस प्रकार आप लोगों की रक्षा कर पाऊँगी।'

रानी की बात सुनकर देवताणन बोले-'हे महारानी, हमारी रक्षा के लिए तुम्हारी रिसा ही काफी है। आप उसे महिष के गले में डाल दीजिए।'

रानी ने ऐसा ही किया। रानी के ऐसा करते ही महिष का गुस्सा शांत हो जाता है। महिष का गुस्सा शांत होने के बाद बरचुक बुफाङ के नीचे ही उसकी बलि दे दी जाती है। उसके बाद चौदह देवता नीचे उतर आते हैं। तब से त्रिपुरी समुदाय में चौदह

देवता लोक देवता के रूप में स्थापित हो जाते हैं। त्रिपुरी जनजाति में रिसा प्रेम और सम्मान का भी प्रतीक है। इस समुदाय में गॉरिया पूजा के दिन देवता के प्रतीक वासौक के सामने केले के पत्ते बिछाकर उसे विभिन्न फूलों से सजाया जाता है। नयी फसलों के साथ भोग में मुर्गी, मुर्गे और अण्डे आदि का चढ़ावा दिया जाता है।

पूजा संपन्न करने के लिए अचाई और सहयोगी अचाई कठोरता से नियमों का पालन करते हैं। त्रिपुरी समाज में गॉरिया पूजा के दिन घर-घर जाकर युवक-युवतियाँ गॉरिया देवता से संबंधित लोकगीत गाते हुए नृत्य करते हैं। नृत्य समाप्त होने पर घर के मालिक उन्हें प्रसाद के रूप में आवाङ (पिठा), फल, सब्जियाँ, रुपए-पैसे आदि देते हैं। बदले में युवक-युवतियाँ मालिक को आशीर्वाद के साथ कुछ रूई, फूल और चावल आदि देते हैं। जिन्हें गृहस्वामी संदूक के भीतर सहज कर रखता है। उसे संदूक में रखते समय वह देवता से प्रार्थना करता है-'हे बाबा गॉरिया अगले वर्ष मैं आपकी फिर से पूजा कर सकूँ यह सामर्थ्य दीजिए।'

पूजा संपन्न कराने के लिए पूजा से तीन-चार दिन पहले पारंपरिक पद्धति से अचाई (पूजारी) और बारुवा (सहयोगी पुजारी) को न्योता दिया जाता है। इसे कॉकबरक में 'अचाई बातिमानि' कहा जाता है। अचाई के बिना गॉरिया पूजा करना असम्भव है।इसलिए जिस घर में गॉरिया पूजा की जानी होती है, उस घर का स्वामी एक बोतल देशी शराब से अचाई को और आधे बोतल से बारुवा को न्योता देता है। शाम को प्रायः तीन बजे गॉरिया देवता का मुर्गी के अण्डे से पाँव पखारे जाते हैं। कॉकबरक भाषा में इसे 'याकूङ सुरूमानि' कहते हैं। परिवार के हर एक सदस्य के नाम से एक अण्डा चढ़ाया जाता है। देवता के पाँव पखारने की प्रक्रिया समाप्त होने पर भक्तों को अण्डे दिए जाते हैं। घर आकर प्रसाद स्वरूप अण्डे को भाजी करके सभी में बाँट दिया जाता है।

उल्लेख्य है कि रीति-नीति कड़े होने के कारण हर कोई गॉरिया देवता की स्थापना अपने आंगन में नहीं करता है। इसके अलावा त्रिपुरी समाज में गॉरिया देवता की गाँव-परिक्रमा नहीं करायी जाती है। उसकी जगह पर प्रत्येक घर में 'रनदक' (चावल से भरा हुआ घड़ा) की पूजा की जाती है। त्रिपुरी समाज में गॉरिया देवता की पूजा 'रनदक' (माँ लक्ष्मी का रूप) और 'नकसु मोताई' (कोना देवता; नकसु मोताई घर की रखवाली करने वाले देवता हैं) पूजा के पश्चात् ही शुरू की जाती है। 'रनदक' की पूजा भोर अर्थात् चार बजे के आस-पास की जाती है। गॉरिया देवता की पूजा से पूर्व अर्थात् चार-पाँच दिन पहले रनदक को धोकर

उसकी साफ-सफाई की जाती है। इस समाज में रनदक को कभी खाली नहीं रखा जाता है। माना जाता है कि रनदक को खाली रखने पर मालिमा या माईलुमा (लक्ष्मी) असन्तोष होती हैं। रनदक को पूरा भर कर रखने पर ही घर में सुख, शान्ति और समृद्धि आती है। त्रिपुरी समाज में रनदक दो प्रकार के होते हैं- रनदक चुला और बुरूई। प्रत्येक परिवार में इन दोनों की पूजा की जाती है। रोज अगरबत्ती जलाकर रनदक की पूजा की जाती है। बाई तरफ खुलुमा और दाई तरफ माईलुमा को बिठाया जाता है। खुलुमा पुरुष और माईलुमा स्त्री के प्रतीक हैं। खुलुमा को मुर्गे और माईलुमा को मुर्गी की बलि दी जाती है। पूजा से पूर्व दोनों रनदक को कच्चे धागों से बनायी गयी फूलों और बेल पत्तों की माला पहनायी जाती है। हर बार रनदक पूजा में बलि नहीं दी जाती है। दीप, अगरबत्ती और प्रसाद चढ़ा कर भी पूजा संपन्न की जाती है।

रनदक पूजा समाप्त होने पर 'आवाङ बुथाई', आवाङ बेलेप (विशेष प्रकार के चावल से बनाया जानेवाला पारम्परिक खान-पान) आदि द्वारा 'नकसु मोताई' की पूजा की जाती है। 'नकसु' मोताई के प्रतीक बाँस से बनाया जाता है। छोटे-छोटे आकार में थोड़ा-सी दूरी बनाकर चतुर्थ कोने में इसे गाड़ा जाता है। पूजा समाप्त होने पर इसे घर के दक्षिण-पूर्व का कोना देखकर स्थापित कर दिया जाता है। अगले वर्ष गॉरिया पूजा का समय आने पर ही इसे हटाया जाता है। पूजा के दिन अधिकांशतः बाँस से बनी नयी वस्तुओं का ही प्रयोग किया जाता है। नकसु पूजा के बाद ही छः बजे के आस-पास गॉरिया पूजा शुरू की जाती है। लगभग एक घंटे तक पूजा चलती है और पूजा से पूर्व अचाई हर वस्तु का निरीक्षण करता है और हर चीज नियमानुसार सही जगह पर रखता है।

'पात कारमानि' (विशेष प्रकार से तैयार किये गये पत्ते) से पूजा की शुरुआत होती है। पूजा के समय जो व्यक्ति घर के भीतर होता है,उसे घर के भीतर ही रहना पड़ता है अर्थात उस समय वह घर से बाहर नहीं निकल सकता। इसी तरह पूजा के समय कोई भी व्यक्ति बाहर से जाकर घर में प्रवेश नहीं कर सकता। पूजा समाप्त होने के बाद पुरोहित मंत्रोच्चारण करते हुए पुराने नकसु के प्रतीक को जल में प्रवाहित कर देता है। लोगों की बुरी नजर घर के लोगों पर न पड़े, इसलिए घर के दरवाजे पर 'खोङ' (नियमों के साथ तैयार किया गया बाँस) गाड़ दिया जाता है। साथ ही पुरोहित मंत्र और पात के द्वारा यह देखने का प्रयास करता है कि इस घर पर किसी की बुरी नजर या छाया तो नहीं पड़ी है। पूजा के समय नकसु मोताई का प्रतीक 'यामफ्रा' (बाँस से बना नयी चटाई) को जमीन पर बिछाकर उस पर पवित्र सफेद कपड़ा रख दिया जाता है। 'यामफ्रा' के

चारों कोने में घेरा बनाकर 'वाफी' (लंबा और नुकीली आकार में कटे हुए बाँस के टुकड़े) को गाड़ दिया जाता है। उसे सफेद कपड़ा ओढ़ाकर अचाई मंत्र पढ़ता है और 'पात करमा' विधि द्वारा पूजा आरंभ करता है। तत्पश्चात् मुर्गा व मुर्गी की बलि दी जाती है। त्रिपुरी समाज में रनदक और गॉरिया देवता की पूजा एक साथ की जाती है।

त्रिपुरी समाज में गॉरिया देवता की पूजा अत्यंत श्रद्धा के साथ की जाती है। लोकमान्यता के अनुसार महाराजा त्रिलोचन के शासन काल से त्रिपुरा की जनजातियों में गॉरिया देवता की पूजा का प्रचलन है। त्रिपुरी समाज में गॉरिया देवता को नमन करके ही विवाह संपन्न किया जाता है।

ग्रंथ-सूची:

देबबर्मा, राजेन्द्रजीत. गॉरिया पूजा. द्वितीय. त्रिपुरा: उपजाति गवेषणा अधिकार, 1999.

देबबर्मा, सुरेन. त्रिपुरार उपजाति आदिधर्म नृत्यकला उ देवदेवी. अगरतला: ज्ञान विचित्र प्रेस, 2004.

संपर्क-सूत्र:
रामठाकुर कॉलेज, अगरतला, त्रिपुरा
ई-मेल- binadebbarma1982@gmail.com
फोन- 7005338952